सामूहिक हत्यारे का बपतिस्मा (9:10–19; 22:10, 12–16; 26:19)

कुछ वर्ष पूर्व, क्रमिक हत्यारे जैफरी दाहमर द्वारा अपने पापों को मानने की बात समाचारों में सुर्खियां बन गई। हाल ही में उसके बपतिस्मे ने भी मीडिया का ध्यान आकर्षित किया।[1]

वर्जीनिया में आरलिंग्टन से मसीह में एक बहन, मेरी मॉट ने दाहमर और उसके पिता के साथ एक टीवी इंटरव्यू देखा था। उसने सोचा, ''इन दो लोगों के जीवनों में एक खालीपन है। वे किसी खोज में हैं, और उन्हें पता नहीं कि वह खालीपन क्या है।'' उसने उन्हें एक पत्र, एक विश्व बाइबल स्कूल का पत्राचार पाठ्यक्रम, और एक बाइबल भेज दी। लगभग उसी समय, में ओक्लाहोमा क्रेसेन्ट से मसीह में एक भाई, कर्टिस बूथ ने दाहमर को एक पाठ्यक्रम भेज दिया। दाहमर ने दोनों पाठ्यक्रमों पूरा करते हुए मॉट और बूथ दोनों को उसे बपतिस्मा देने की बिनती लिख दी।

विसकॉन्सिन में मैडिसन की प्रभु की कलीसिया के एक प्रचारक, रॉय रैट्क्लिफ़ से सम्पर्क किया गया। दाहमर से बात करने और आवश्यक प्रबन्ध जुटाने के बाद उसने उसे जेल के पानी से भरे टब में बपतिस्मा दिया। अगले कई महीनों तक, रैट्क्लिफ़ दाहमर के साथ बाइबल अध्ययन करता रहा। रैट्क्लिफ़ ने हाल ही में लिखा:

> लगभग हर कोई जैफ़ की ईमानदारी पर प्रश्न उठाता है। परन्तु मैं वहां था, और प्रश्न करने वाले ये लोग वहां नहीं थे. ... मैं इस बात से कायल हूं कि उसने पूरी ईमानदारी से इच्छा जताई थी. ... उसने इस तथ्य को स्वीकार किया था कि वह जेल में ही मरेगा। बपतिस्मा लेने से जैफ़ को इस जीवन में कुछ भी प्राप्त होने वाला नहीं था; उसे वह सब कुछ अगले जीवन में ही मिलने वाला था।

धन्यवाद देने के एक दिन पहले रैट्क्लिफ़ ने दाहमर के साथ अध्ययन किया था। पांच दिन बाद, 28 नवम्बर, 1994 को उसके एक साथी कैदी ने दाहमर की पिटाई की जिससे वह मर गया।

मेरी मॉट से यह प्रश्न किया गया कि क्या उसके विचार में दाहमर का वास्तव में उद्धार हुआ था या नहीं। ''मेरा मानना है कि मसीहियों को यह समझाने में पौलुस को बड़ी

मुश्किल आई थी कि वह बदल चुका है,'' उसने उत्तर दिया, ''परन्तु आज हम उसकी ईमानदारी पर प्रश्न नहीं उठाते।''

जैफ़री दाहमर और प्रेरित पौलुस, क्या इन, दोनों में कुछ समानताएं हो सकती हैं? पहले तो हम ज़ोरदार ढंग से उत्तर देते हैं, ''नहीं!'' एक सामूहिक हत्यारे की तुलना जिसने निन्दनीय कार्य किए, की तुलना आज तक के सबसे महान लोगों में से एक के साथ करना निन्दात्मक लगता है। फिर हम स्मरण करते हैं कि पौलुस ने अपना वर्गीकरण पापियों में ''*सब से बड़ा*'' के रूप में किया है (1 तीमुथियुस 1:15)।

दाहमर और पौलुस में कई समानताएं देखी जा सकती हैं: दोनों ही बहुत से निर्दोष पीड़ितों की हत्या के लिए ज़िम्मेदार थे। उनके मनपरिवर्तन अप्रत्याशित और स्तब्ध करने वाले थे। दोनों को ही दूसरों को यह विश्वास दिलाने में मुश्किल आई थी कि वे बदल चुके हैं। उनके बपतिस्मों के बाद भी लोगों ने उनके जीवनों का अन्त करने की इच्छा व्यक्त की थी। तथापि, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि दोनों के मनपरिवर्तन यह प्रमाणित करते हैं कि परमेश्वर के सामने कुछ भी ''असम्भव'' नहीं है। यदि दाहमर और पौलुस का उद्धार हो सकता था, तो *किसी का भी* उद्धार हो सकता है!

पिछले पाठ में हमने (1) एक अडिग पूर्ण विश्वास (शाऊल का विश्वास कि उसे मसीहियत को नाश कर देना चाहिए), (2) एक अप्रत्याशित सामना (जब यीशु ने मार्ग में उसे दर्शन दिया), और (3) एक असाधारण चुनौती (जब यीशु ने शाऊल को अन्यजातियों में सुसमाचार ले जाने की चुनौती दी) को देखा था। अन्त में हमने देखा था कि शाऊल, उस ज्योति के कारण अन्धा हो चुका था और उसे दमिश्क में सीधी नामक गली में एक घर में पहुंचाया गया था। आइए वहीं से कहानी को आगे बढ़ाते हैं।

एक निरुत्साहित मसीही (9:10-17; 22:10, 12-16)

प्रभु ने शाऊल को तीन दिन तक आत्मिक और बौद्धिक अंधेरे में रहने दिया।[2] क्यों? प्रेरितों की पुस्तक में किसी भी पश्चात्तापी पापी से इस प्रकार का व्यवहार नहीं किया गया, सो इसकी अवश्य ही कोई वजह रही होगी।[3] हो सकता है कि प्रभु ने शाऊल को समर्पण का ''हिसाब-किताब'' करने के लिए अकेला छोड़ दिया हो (तु. लूका 14:28); *जो कुछ भी* उसके लिए मूल्यवान था, उसे उसका बलिदान देना पड़ना था (तु. फिलिप्पियों 3:7)। हो सकता है कि प्रभु ने यहूदियों को शाऊल का अन्धापन देखने का अवसर दिया ताकि जब उसका पूरी तरह से मनपरिवर्तन हो जाए तो वे और भी प्रभावित हो सकें।[4]

मैं कहा करता था कि क्रूर अत्याचारी तक पहुंचने के लिए एक बहादुर प्रचारक को ढूंढने में प्रभु को तीन दिन लग गए थे। मैं यह मज़ाक में कहता था, क्योंकि यदि प्रभु चाहता, तो वह दमिश्क के द्वार पर एक प्रचारक को प्रतीक्षा करवा सकता था जैसे उसने मार्ग पर खोजे की प्रतीक्षा में एक प्रचारक को रखा था। यह सत्य है कि अन्ततः जब प्रभु प्रचारक के पास पहुंचा,[5] तो वह व्यक्ति शाऊल के पास जाने में कुछ कम ही उत्साह दिखा रहा था।

''दमिश्क में हनन्याह नाम[6] का एक चेला था, उससे प्रभु [यीशु[7]] ने दर्शन में कहा, हे हनन्याह! उसने कहा; हां, प्रभु'' (9:10)। परमेश्वर के इस आज्ञाकार बालक की अध्याय पांच में धन से प्यार करने वाले हनन्याह के साथ तुलना न करें। यह हनन्याह ''व्यवस्था के अनुसार एक भक्त मनुष्य जो वहां के रहने वाले सब यहूदियों में सुनाम था'' (22:12)।[8] जब यीशु ने उसे दर्शन दिया, तो उसने पहले सकारात्मक उत्तर दिया : ''हां, प्रभु।'' (तु. 1 शमूएल 3:1-18; यशायाह 6:8-13)। मैं कल्पना कर सकता हूं कि हनन्याह प्रभु के निर्देशों को लिखने के लिए एक कलम और कागज़ निकाल लेता है।

यीशु कहने लगा, ''उठकर उस गली में जा जो सीधी कहलाती है'' (9:11क)।

हनन्याह ने लिख लिया। ''सीधी नाम की गली। ठीक है।''

''और यहूदा के घर में'' (9:11ख)।

''यहूदा का घर। ठीक है।''

''... एक तारसी को पूछ ले ...'' (9:11ग)।

मैं कल्पना करता हूं कि हनन्याह हिचकिचा रहा है, लेकिन फिर उत्तर देता है: ''तारसी। ठीक है।''

''... *शाऊल* नाम ... क्योंकि देख, वह प्रार्थना कर रहा है। और उसने हनन्याह नामक एक पुरुष को भीतर आते, और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है; ताकि फिर से दृष्टि पाए'' (9:11ग, 12)।

मैं हनन्याह को कलम रखते देखता हूं। ''शाऊल नाम ...? मैं इस आदमी को तो जानता हूं, प्रभु। मैं तुम्हें इसके बारे में बताता हूं!''

> हनन्याह ने उत्तर दिया, कि हे प्रभु, मैंने इस मनुष्य के विषय में बहुतों से सुना है, कि इसने यरूशलेम[9] में तेरे पवित्र लोगों[10] के साथ बड़ी-बड़ी बुराइयां की हैं। और यहां भी इसको महायाजकों की ओर से अधिकार मिला है, कि जो लोग तेरा नाम लेते हैं, उन सब को बान्ध ले[11] (9:13, 14)।

प्रभु जब कोई आज्ञा देता है, तो उत्तर में वह ''न'' नहीं सुनना चाहता। यीशु ने ''जाने'' के अपने निर्देश को विस्तार से दोहराया। हनन्याह ने शाऊल को अत्याचारी कहा था, परन्तु यीशु ने अतीत के बजाय भविष्य की ओर देखा। एक हत्यारे के बजाय, यीशु ने देखा कि ''यह, तो अन्यजातियों[12] और राजाओं, और इस्राएलियों के साम्हने मेरा नाम प्रकट करने के लिए मेरा चुना हुआ पात्र[13] है। और मैं उसे बताऊंगा, कि मेरे नाम के लिए उसे कैसा-कैसा दुख उठाना पड़ेगा'' (9:15, 16)।

यीशु के शब्दों ने शाऊल की सेवकाई के ''महाकष्ट और हर्ष''[14] की रूपरेखा दे दी। ''हर्ष'' की बात यह थी कि उसने ''अन्यजातियों और राजाओं, और इस्राएलियों के सामने'' यीशु के नाम की गवाही देने का सम्मान पाना था। अन्यजातियों का उल्लेख पहले आया है, क्योंकि यह पौलुस का विशेष मिशन था। जिन राजाओं के सामने उसे जाना था

उनमें हेरोदेस अग्रिप्पा (देखिए 25:23-26) और नीरो भी थे।[15]

''महाकष्ट'' का पता इन शब्दों में मिलता था कि ''मैं उसे बताऊंगा कि मेरे नाम के लिए उसे कैसा-कैसा दुख उठाना पड़ेगा।[16]'' यीशु के शब्दों में विडम्बना यह थी कि जो आदमी दमिश्क में लोगों को कष्ट देने के लिए आया था, उसे ही कष्ट सहना पड़ना था। प्रभु जब सेवा के लिए पुकारता है, तो निरपवाद वह हमें कष्ट सहने के लिए भी पुकारता है (2 तीमुथियुस 3:12)।

हनन्याह को मिले प्रभु के निर्देश को छोड़ने से पहले आयत 12 में कई शब्दों को रेखांकित कर लें: ''उस ने ... एक पुरुष को भीतर आते, और अपने ऊपर हाथ रखते देखा है; *ताकि फिर से दृष्टि पाए*।'' इस पर कुछ विवाद है कि हनन्याह ने शाऊल पर हाथ *क्यों* रखे। पवित्र शास्त्र स्पष्ट करता है कि हाथ रखने का उद्देश्य उसे *फिर से दृष्टि देना था*।

हनन्याह ने दूसरी बार ''न'' नहीं कहा:

> तब हनन्याह उठ कर उस घर में गया, और उस पर अपना हाथ रखकर[17] कहा, हे भाई[18] शाऊल, प्रभु, अर्थात यीशु, जो उस रास्ते में, जिस से तू आया तुझे दिखाई दिया था, उसी ने मुझे भेजा है, कि तू फिर दृष्टि पाए और पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए (9:17)।

ध्यान दें कि हनन्याह ने यह नहीं कहा कि उसके हाथ रखने से शाऊल को पवित्र आत्मा मिलना था, बल्कि यह कहा कि उसे दो उद्देश्यों के लिए *भेजा गया* था: (1) शाऊल फिर से देखने लगे और (2) शाऊल पवित्र आत्मा से भर जाए। जैसे यीशु ने पहले घोषणा की थी, हनन्याह के हाथ रखने से पहला उद्देश्य पूरा हुआ। हनन्याह ने कहा, ''हे भाई शाऊल फिर देखने लग!'' (22:13)। ''और तुरन्त उसकी आंखों से छिलके से गिरे,[19] और वह देखने लगा। [और उसी घड़ी (उसने) उसे देखा]'' (9:18क; तु. 22:13)।

हनन्याह ने फिर यीशु द्वारा मार्ग में दी गई मुख्य चुनौती को दोहराया:[20]

> हमारे बापदादों के परमेश्वर ने तुझे इसलिए ठहराया है, कि तू उसकी इच्छा को जाने, और उस धर्मी को देखे,[21] और उसके मुंह से बातें सुने। क्योंकि तू उसकी ओर से सब मनुष्यों के सामने उन बातों का गवाह होगा,[22] जो तू ने देखी और सुनी हैं[23] (22:14, 15)।

इन शब्दों के दोहराने से यह पक्का हो गया था कि हनन्याह प्रभु का भेजा हुआ है और, साथ ही, इससे यीशु की आज्ञा पर ज़ोर दिया गया।

शाऊल को अभी भी यह नहीं बताया गया था कि *उद्धार* पाने के लिए उसे क्या ''करना है।'' हनन्याह ने देखा कि आदमी अपने घुटनों पर झुका हुआ है, उसके गालों पर आंसू टपक रहे हैं, और उसने उसे प्रभु के निर्देश दिए: ''अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल''[24] (22:16)।

जब मैं लड़का था, उन दिनों साम्प्रदायिक कलीसियाओं के धर्मजागरण वाले कहा करते थे, ''जैसे दमिश्क के मार्ग पर शाऊल का उद्धार हुआ, तुम भी करवा लो! दर्शन देखो, एक पुकार को सुनो और अनुभव पाओ!'' यदि शाऊल का उद्धार दमिश्क के मार्ग पर हो गया था, तो *प्रभु* को इसकी जानकारी नहीं थी, क्योंकि उसने शाऊल से कहा, ''अब उठकर नगर में जा, और जो तुझे *करना है* वह तुझ से कहा जाएगा'' (9:6)। *शाऊल* को इसकी जानकारी नहीं थी, क्योंकि उसने पूछा, ''हे प्रभु मैं क्या करूं?'' (22:10) और फिर तीन दिन तक उपवास रखा और प्रार्थना की (यदि उसे इससे उद्धार मिल गया था, तो पूरे पवित्र शास्त्र में वह सबसे दयनीय उद्धार प्राप्त व्यक्ति था!) फिर, *परमेश्वर के आत्मा से प्रेरणा प्राप्त प्रचारक* को इसका पता नहीं था, क्योंकि उसने शाऊल को बताया, ''अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर *अपने पापों को धो डाल*'' (22:16)।

शाऊल ने यीशु पर विश्वास कर लिया था, परन्तु अभी भी उसके पाप धोने की आवश्यकता थी। उसने अपने पापों से मन फिरा लिया था,[25] परन्तु अभी भी उसके पापों को धोए जाने की आवश्यकता थी। उसने मसीह को ''प्रभु'' के रूप में अंगीकार कर लिया था, परन्तु अभी भी उसके पाप धोए जाने बाकी थे। परमेश्वर के संदेशवाहक के अनुसार, उसके पाप तब तक नहीं धोए जाने थे जब तक वह बपतिस्मा नहीं लेता, अर्थात पानी में डुबकी नहीं लगाता।

इसका अर्थ यह नहीं कि दमिश्क के पानी में पापों को धोने की कोई विशेष शक्ति थी। जिस पानी में शाऊल ने बपतिस्मा लिया था, वह वही पानी था जिसका इस्तेमाल दमिश्क में रहने वाले लोग खाना बनाने और कपड़े धोने के लिए करते थे। पवित्र शास्त्र ज़ोर देता है कि हमारे पाप *यीशु के लोहू में* धोए जाते हैं (प्रकाशितवाक्य 7:14; तु. प्रकाशितवाक्य 1:5)। यीशु का लोहू ही है *जो* हमारे पापों को धोता है; बपतिस्मे के *द्वारा* हमारे पाप उसके लोहू से धोए जाते हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि कलीसिया के बाहर के पापी को उद्धार के लिए परमेश्वर से *प्रार्थना* करनी चाहिए। यदि उद्धार के लिए शाऊल को ''पापी की प्रार्थना''[26] करने की आवश्यकता थी, तो वह हनन्याह के आने पर शारीरिक अवस्था में था परन्तु प्रचारक ने कहा, ''देरी मत कर! घुटने सीधे कर। प्रार्थना करना बन्द कर और आज्ञा मानना आरम्भ कर!'' पापी के लिए परमेश्वर से उसे प्रेम करने के लिए या उद्धार के लिए कहना ''प्रतीक्षा करना'' है, क्योंकि एक पापी को विश्वास दिलाने के लिए कि परमेश्वर उससे प्रेम करता है और परमेश्वर ने वह सब कुछ कर दिया है जो उसके उद्धार के लिए आवश्यक था (यूहन्ना 3:16)। यह *पापी* पर निर्भर है कि वह अब आज्ञापालन से उसका उत्तर दे। ''उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।''[27]

बेझिझक परिवर्तित (9:18, 19; 26:19)

निर्णय लेना शाऊल के लिए कठिन था। किसी के लिए भी हमेशा यह मानना कठिन

होता है कि वह गलत है।[28] जो आज्ञा हनन्याह ने दी, उसे मानना और भी कठिन था। बपतिस्मा अपने आप में कठिन नहीं था। शाऊल धोने और डुबोने की औपचारिकता से परिचित था। कठिन भाग यीशु का ''नाम लेकर'' था। ''उसका नाम लेने'' में उस सब को स्वीकार करना था, जो यीशु है। इसका अर्थ था कि शाऊल यह स्वीकार कर रहा था कि यीशु ही प्रभु है, और वह *उसके* अधिकार से बपतिस्मा लेने के साथ ही अपना बाकी का जीवन *उसे* समर्पित कर रहा था! इसका अर्थ था कि शाऊल को अपने सभी निकट सम्बन्धियों की ओर पीठ करनी पड़नी थी अर्थात परिवार, मित्र, प्रसिद्धि, और भविष्य की चिन्ता छोड़नी पड़नी थी।

यद्यपि निर्णय लेना कठिन था, परन्तु जब हनन्याह ने शाऊल को बताया कि उसे क्या ''करना'' ज़रूरी था, तो वह हिचकिचाया नहीं। उसने बाद में राजा अग्रिप्पा को बताया, ''मैंने उस स्वर्गीय दर्शन की बात न टाली'' (26:19)। तुरन्त, उसने ''उठकर बपतिस्मा लिया'' (9:18)। शाऊल के डुबकी लेने के स्थान का उल्लेख नहीं है, परन्तु नगर में से अबाना और पास से ही पर्पर नदियां बहती थीं।[29]

सौदा हो चुका था; शाऊल के लिए अब मुकरने की बात ही नहीं थी। उसने बाद में लिखा:

> परन्तु जो-जो बातें मेरे लाभ की थीं, उन्हीं को मैंने मसीह के कारण हानि समझ लिया है। बरन मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की पहिचान की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूं: जिस के कारण मैंने सब वस्तुओं की हानि उठाई, और उन्हें कूड़ा समझता हूं, जिस से मैं मसीह को प्राप्त करूं (फिलिप्पियों 3:7, 8)।

बपतिस्मे के समय शाऊल के पाप यीशु के लोहू से धोए गए थे। उसने हनन्याह की बात पूरी करते हुए कि ''पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाए'' पवित्र आत्मा का दान पाया (2:38)।[30] प्रभु द्वारा उसे उस कलीसिया में मिला भी लिया गया जिसे नाश करने की उसने कोशिश की थी (2:41, 47)। शाऊल का जीवन अब मसीह में नया हो चुका था! बाद में उसने कहा कि उसने बपतिस्मे की पानी रूपी कब्र में *अपना अतीत दफ़न कर दिया*:

> क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें। क्योंकि यदि हम उस की मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा *पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया,* ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें (रोमियों 6:3-6)।

इन दिनों में पहली बार शाऊल ने आनन्द से ''भोजन करके बल पाया''

(9:18ख)।

हम पूछ सकते हैं कि सारे संसार के लोगों में से ''शाऊल ही क्यों?'' प्रभु ने, अन्यजातियों से प्रेरित बनाने के लिए शाऊल को ही क्यों चुना, जो कि एक सामूहिक हत्यारा था? वह बरनबास जैसे बहुत से महान मसीहियों में से किसी एक को चुन सकता था। यदि वह किसी गैर मसीही को ही बुलाना चाहता था तो परमेश्वर का भय रखने वाले बहुत से और यहूदी भी तो थे जिन पर शाऊल की तरह अत्याचारों का आरोप नहीं था। शाऊल को ही क्यों बुलाया गया?

क्योंकि हमारी सोच प्रभु की सोच नहीं है (यशायाह 55:8, 9), हम निश्चित तौर पर इस प्रश्न का उत्तर नहीं दे सकते परन्तु कुछ अनुमान ज़रूर लगा सकते हैं। एक बात तो यकीनन शाऊल के विलक्षण गुण, उसकी बौद्धिकता, उसका जोश व उसकी कर्म-शक्ति थी। यदि इनका *सही* दिशा में प्रयोग होता, तो उससे कितनी भलाई हो सकती थी! शायद वह इसलिए भी चुना गया क्योंकि उसका आरम्भिक जीवन तरसुस में बीता था, वह अन्यजातियों की सोच को फलस्तीन में रहने वालों से अच्छी तरह समझ सकता था। वह इस कार्य के लिए उचित व्यक्ति था।

यह भी सम्भव है कि प्रभु की पसन्द में और भी बातें शामिल रही होंगी। उदाहरण के लिए, शाऊल का यह पूर्ण विश्वास था कि यहूदी धर्म का मसीहियत से कोई समझौता नहीं हो सकता। उसके इस पूर्ण विश्वास ने मसीहियत का विनाश करने के लिए उसे विवश किया।[31] जब वह मसीही बना, तो उसने वह पूर्ण विश्वास बरकरार रखा। उसके पत्र इस सच्चाई से भरपूर हैं कि मसीहियत में समझौता नहीं हो सकता!

एक और बात यह भी हो सकती है जिसका उल्लेख किया जाना चाहिए, जिसे यीशु ने इन शब्दों में बताया: ''जिसका थोड़ा क्षमा हुआ है, वह थोड़ा प्रेम करता है'' (लूका 7:47)। (इसका अर्थ यह हुआ, कि ''जिसका अधिक क्षमा हुआ है वह अधिक प्रेम करता है।'') जब मार्ग में यीशु ने शाऊल को दर्शन दिया, तो शाऊल को अचानक अपनी भयंकर चूक का अहसास हुआ। वह परमेश्वर की निन्दा का दोषी था और मृत्यु से कम दण्ड के योग्य नहीं था किन्तु प्रभु उसके बाकी जीवन को आश्चर्य से भरकर उसे क्षमा करना चाह रहा था। उसने ''परमेश्वर के पुत्र ... जिसने *मुझ से* प्रेम किया, और *मेरे लिए* अपने आप को दे दिया'' के विषय में लिखा (गलतियों 2:20)। उसने कहा:

> और मैं, अपने प्रभु मसीह यीशु का, जिसने मुझे सामर्थ दी है, धन्यवाद करता हूं; कि उसने मुझे विश्वासयोग्य समझकर अपनी सेवा के लिए ठहराया। मैं तो पहिले निन्दा करने वाला, और सताने वाला, और अन्धेर करने वाला था; ... मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आया, जिनमें सबसे बड़ा मैं हूं (1 तीमुथियुस 1:12, 13, 15)।

जिसे अधिक क्षमा मिली थी उसने प्रेम भी अधिक किया और अपने जीवन के शेष दिन उस विश्वास को फैलाने में लगा दिए जिसे उसने कभी नाश करने का यत्न किया था!

सारांश

हमारे पास यदि स्थान होता, तो हम उस ''खत्म न होने वाले समर्पण'' की भी बात कर सकते थे जो शाऊल ने प्रभु के लिए तुरन्त आरम्भ किया (9:19-31), परन्तु उस विषय को हमें भावी अध्ययनों के लिए छोड़ना पड़ेगा। इस पाठ को अब, हम यहीं समाप्त करते हैं।

अन्त में, आइए पाठ के आरम्भ में की गई चर्चा की ओर लौटें: यदि जैफ़री दाहमर और तरसुस के शाऊल का उद्धार हो सकता था, तो *किसी का भी* उद्धार हो सकता है। पौलुस ने स्वयं इस सच्चाई पर 1 तीमुथियुस 1 में ज़ोर दिया। यह कहने के बाद, कि ''मसीह यीशु पापियों का उद्धार करने के लिए जगत में आया, जिनमें सब से बड़ा मैं हूं,'' जोड़ते हुए उसने कहा: ''पर मुझ पर इसलिए दया हुई, कि मुझ सबसे बड़े पापी में यीशु मसीह अपनी सहनशीलता दिखाए, कि जो लोग उस पर अनन्त जीवन के लिए विश्वास करेंगे, उनके लिए मैं एक आदर्श बनूं'' (1 तीमुथियुस 1:15,16)।

मैं आपकी आत्मिक स्थिति के बारे में नहीं जानता। परन्तु इतना जानता हूं कि आप पाप में कितना डूब चुके हैं। मैं यह नहीं जानता कि आपने कितने भयंकर पाप किए होंगे। परन्तु, मैं यह जानता हूं कि आपके पाप शाऊल के पापों से भयंकर नहीं होंगे। आपके प्राण को बचाने के लिए प्रभु का अनुग्रह और कृपा ही काफ़ी है। इसलिए, यदि आप, प्रभु की आज्ञा को टाल रहे हैं, तो अधिक देर मत कीजिए। ''अब देर क्यों करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल'' (22:16)!

प्रवचन नोट्स

हनन्याह पर एक दिलचस्प प्रवचन दिया जा सकता है। ''एक चेला'' अच्छा शीर्षक होगा (9:10)। यह ध्यान दिया जा सकता है कि, जहां तक लिखे हुए की बात है, वह कलीसिया का ''केवल एक साधारण सदस्य'' था, परन्तु परमेश्वर द्वारा आश्चर्यजनक ढंग से उपयोग के लिए उपलब्ध था।

पादटिप्पणियां

[1]दाहमर की कहानी के स्थान पर सुनने वालों के लिए और अधिक परिचित ऐसी ही और घटनाओं का इस्तेमाल किया जा सकता है। [2]वह अन्धा था, खोया हुआ था, और यह नहीं जानता था कि उसे क्या करना है। ''अन्धेरे में रहने दिया'' अलंकारिक भाषा हो सकती है जिसका अर्थ है ''अज्ञानता में रहने दिया।'' एकमात्र ''प्रकाश'' जो इन तीन दिनों में शाऊल को मिला, वह उसे बताने के लिए एक दर्शन था कि हनन्याह आ रहा था (9:12)। [3]कई लोगों का सुझाव है कि अन्धेरे के तीन दिन ''शाऊल को अपने पापों की ओर ध्यान देने के लिए'' दण्ड था। इसमें कोई संदेह नहीं कि शाऊल ने उन तीन दिनों में दुख सहा होगा, परन्तु यह कहना कि देरी का मुख्य उद्देश्य यह था, प्रभु के अनुग्रह से मेल नहीं खाता लगता। [4]9:21 पर नोट्स देखिए। [5]मैं इस अर्थ के लिए कि हनन्याह ने शाऊल को प्रभु का संदेश दिया, ''प्रचारक'' शब्द का इस्तेमाल करता हूं। इस बात का कोई संकेत नहीं है कि हनन्याह पूरा समय काम करने वाला सुसमाचार

प्रचारक था। [6]''हनन्याह'' नाम का अर्थ ''यहोवा अनुग्रहकारी है,'' जो उस आदमी के लिए उचित पदनाम है जिसने शाऊल के पास परमेश्वर के अनुग्रह को देना था। [7]देखिए आयत 15. [8]मसीहियत को अपनाने से पहले वह एक अच्छा यहूदी था और *अभी भी* यहूदियों में उसका सम्मान था। शायद उसका चयन इसलिए हुआ क्योंकि उसके प्रति यहूदियों के सम्मान ने शाऊल के मनपरिवर्तन के सम्बन्ध में यहूदी समाज में उसकी गवाही पर अधिक विश्वास करना था। [9]क्योंकि हनन्याह ने शाऊल से कलीसिया को होने वाले कष्ट के बारे में ''सुना'' था, इसलिए स्पष्ट है कि वह उनमें से नहीं था जो प्रेरितों 8 अध्याय में तितर-बितर हो गए थे। यह भी हो सकता है कि उसे भी उनमें से किसी ने परिवर्तित किया हो, जो बिखर गए थे। [10]प्रेरितों के काम की पुस्तक में मसीहियों के लिए ''पवित्र लोग'' शब्द का इस्तेमाल यहां पहली बार किया गया (प्रेरितों 9:32, 41; 26:10 भी देखिए)। शब्दावली में देखिए ''पवित्र लोग।''

[11]विद्वानों की रुचि यह जानने में रही है कि हनन्याह को यह पता कैसे चला। कइयों ने खोज की है कि मसीही लोग भागकर शाऊल और उसके दल से पहले दमिश्क में पहुंच गए थे। नगर में हर कोई शाऊल और उसके नियोजित उद्देश्य के बारे में बातें कर रहा था (ध्यान दें आयत 21)। [12]यह पहली बार है जब *शास्त्र में* परमेश्वर की योजना के एक भाग के रूप में अन्यजातियों का विशेष उल्लेख आया। तथापि, कालक्रमानुसार पहली बार 26:17 में आता है, सो अन्यजातियों के लिए मेरी टिप्पणियां पहले, 26:17 की चर्चा के साथ दी गई थीं। [13]यूनानी शब्द के अनुसार ''पात्र'' का अर्थ है ''बर्तन'' और यह मूल्यवान सामान (सुसमाचार) के लिए बहुमूल्य बर्तन (शाऊल) की ओर संकेत करता है। पौलुस ने बाद में अपने आप को और अधिक नम्र भूमिका में चित्रित करते हुए इस अलंकार का इस्तेमाल किया (2 कुरिन्थियों 4:7)। [14]*महाकष्ट और हर्ष* इर्विंग स्टोन के एक (अंग्रेज़ी) नॉवल का शीर्षक है। [15]प्रेरितों 25:11, 12. उस समय नीरो कैसर के सिंहासन पर था। प्रेरितों की पुस्तक पौलुस पर नीरो द्वारा मुकदमा चलाए जाने से पहले पूरी होती है, किन्तु हम जानते हैं कि पौलुस के साथ प्रभु की प्रतिज्ञा के कारण ही ऐसा हुआ (27:23, 24)। [16]यीशु ने गलत तस्वीर नहीं दिखाई थी कि प्रभु की चुनौती को स्वीकार करने का निर्णय लेकर शाऊल को क्या अपेक्षा करनी चाहिए थी। न ही हमें अपने मन में यह विश्वास करने की तस्वीर प्रस्तुत करनी चाहिए कि यदि लोग मसीह को स्वीकार करते हैं तो उन्हें कोई परेशानी नहीं होगी (ध्यान दें 14:22)। शाऊल के दुख के सम्बन्ध में यीशु की बात का कुछ भाग पूरा होने के लिए, देखिए 2 कुरिन्थियों 11:23-28. [17]यह अनुमान लगाना ज़रूरी है कि ''हनन्याह को चंगाई देने की योग्यता कैसे मिली।'' यह शारीरिक चंगाई का कोई आश्चर्यकर्म नहीं था। अन्धा होना जहां अलौकिक था, वहीं उसकी दृष्टि का बहाल होना भी वैसा ही था। जो कुछ हनन्याह ने किया और कहा, उसमें वह प्रभु का एक प्रतिनिधि था। यह तो ऐसा था जैसे मसीह स्वयं बात और काम कर रहा था। [18]''भाई'' शब्द यह प्रमाणित नहीं करता कि शाऊल का उद्धार पहले ही हो चुका था। यहूदियों (बल्कि यहूदी मसीहियों) के लिए साथी यहूदियों (बल्कि गैर-मसीही यहूदियों) को सम्बोधित करने के लिए ''भाई'' (22:1) शब्द का प्रयोग करना आम बात थी। तथापि, स्नेहपूर्ण शब्द ''भाई'' से हनन्याह की ओर से *मन के परिवर्तन* का संकेत मिल सकता है। [19]वाक्यांश ''छिलके से गिरे'' संकेत देता है कि जब शाऊल की दृष्टि ठीक हुई तो कुछ ऐसा हुआ जिसे वहां उपस्थित लोग *देख* सकते थे। [20]यह अनुमान देता है कि ये शब्द यीशु द्वारा मार्ग में बोले गए *थे*। 26:16-18 पर नोट्स देखिए।

[21]''धर्मी'' यीशु को कहा गया (3:14; 7:52)। [22]हनन्याह ने विशेष तौर पर अन्यजातियों का उल्लेख नहीं किया, परन्तु वे ''सब मनुष्यों'' में शामिल होंगे। [23]वाक्यांश ''गवाह ... जो तूने देखी और सुनी हैं'' ''गवाह'' शब्द के मुख्य अर्थ के लिए बाइबल की सबसे उत्तम व्याख्याओं में से एक है। [24]''उसका नाम लेकर'' में वह सारी स्वीकृति शामिल है जो मसीह में है। कुछ ढंग जिनमें यह बपतिस्मे के समय व्यक्त किया जाता है, ये हैं (1) बपतिस्मे से पहले उसके नाम का अंगीकार और (2) बपतिस्मे के समय सहायतार्थ बुलाने के लिए उसका नाम लेना। हमें बपतिस्मा लेने के *बाद* ''उसका नाम लेना'' जारी रखना चाहिए (9:14 में मसीहियों का चित्रण देखिए; मत्ती 10:32, 33 भी देखिए)। [25]शाऊल का पापों से मन फिराना तीन दिनों के समय में उसके ईश्वरीय शोक से प्रकट है। [26]तथाकथित ''पापी की प्रार्थना'' एक प्रार्थना जो वचन में नहीं मिलती, परमेश्वर से यीशु को उद्धारकर्त्ता के रूप में स्वीकार करने के आधार पर क्षमा मांगना

है। यह प्रार्थना मनुष्यों के द्वारा गढ़ी गई है, परमेश्वर के द्वारा नहीं। [27]कुछ लोग कहते हैं कि किसी को उसके सिर पर पानी के छिड़काव या उंडेलने से बपतिस्मा दिया जा सकता है। यदि ऐसा होता, तो शाऊल पूरी तरह उसके लिए शारीरिक स्थिति में था, किन्तु हनन्याह ने कहा, ''*उठ,* बपतिस्मा ले।'' बपतिस्मा लेने के लिए शाऊल को उठना और कहीं और जाना आवश्यक था क्योंकि ''बपतिस्मा'' शब्द का अर्थ है ''डुबोया जाना।'' [28]मेरा एक मित्र कहता है कि उसने बहुत से ऐसे लोगों के लिए काम किया है जो अपनी गलती मानने से पहले मर जाएंगे। [29]तु. 2 राजा 5:12. अनेक उपयुक्त तालाब भी उपलब्ध थे। [30]''से परिपूर्ण'' का अर्थ है ''द्वारा संचालित।'' इसका इस्तेमाल चमत्कारी या गैर चमत्कारी अर्थ में हो सकता है (इफिसियों 5:18)। कहीं पर, शाऊल/पौलुस चमत्कारी अर्थ में ''आत्मा से परिपूर्ण'' था (देखिए अगला पाठ)। हम यह नहीं कह सकते कि जब हनन्याह उसके पास आया तो शाऊल को आश्चर्यकर्म करने की योग्यताएं मिलीं या नहीं, परन्तु *निश्चित रूप से* बपतिस्मा लेने के समय उसने आत्मा को दान के रूप में पाया था। हम यह कह सकते हैं कि आत्मा का अन्तर्निवास वह था जो हनन्याह के मन में था जब उसने शाऊल के ''आत्मा से परिपूर्ण'' होने की बात की।

[31]एक माली घास फूस को निकाल देता है ताकि फूल बढ़ सकें, और हम अन्धेरे को भगाने का यत्न करते हैं ताकि प्रकाश हो जाए।